श्रीगोरखनाथ मन्दिर में श्रीराम कथा

गोरखपुर, 26 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ मन्दिर में चल रही **'श्रीराम कथा'** के पॉचवे दिन कथा व्यास **जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** ने श्रीराम कथा को विस्तार देते हुये कहा कि श्रीराम कथा सभी जन्मों के कर्म का नाश कर जन्म–पुनर्जन्म से मुक्त करती है, सुख–सम्पदा को देने वाली है, यमराज के दूतों को डराने वाली है। श्रीराम कथा के महत्व से प्रारम्भ कथा विस्तार पाती है और श्रीराम कथा में भगवान परशुराम एवं श्रीराम–सीता विवाह का प्रसंग प्रवेश करता है। धनुष यज्ञ में दशरथ नंदन श्रीराम द्वारा शिवधनुष खण्डित होने के बाद परशुराम का कथा में अवतरण होता है। धनुष यज्ञ में जब अभिमान पराजित हो गया। अभिमान के प्रतीक राजाओं से शिवधनुष हिला तक नही। विश्वामित्र ने शुभघड़ी जानकर श्रीराम को धनुष तोड़ने की आज्ञा दी। धनुश के खण्डित होने के बाद जनक दुलारी ने जयमाल भगवान श्रीराम के गले में डाल दिया। यह दृष्य देखकर सभागार में उपस्थित सभी श्रद्धालु अत्यन्त भाव–विभोर होकर **कथा व्यास** के साथ श्रीराम कथा में संगत करने लगे। समवेत तालियों की थाप के साथ पुश्प वर्शा का जो मनोहारी दृष्य प्रस्तुत हुआ मानों जनकपुर का स्वंयम्बर साक्षात् इस सभागार में आज रूपायित हो गया हो। शिव धनुष के टूटते ही जनकपुर में पहुचे परशुराम के क्रोध से अन्य उपस्थित राजा सहम गये। परशुराम जी न पहॅचे होते तो उपस्थित दस हजार राजाओं द्वारा श्रीराम लक्ष्मण के साथ युद्ध अवश्य संभावित था। यह युद्ध परशुराम के कारण टल गया। श्रीराम–लक्ष्मण एवं परशुराम संवाद पर कथा को विस्तार मिलता है। उनके क्रोध के सामने भगवान विनीत भाव में कहते हैं–

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केऊ एक दास तुम्हारा।।

दशरथनन्दन शेषावतार लक्ष्मण एवं भगवान श्रीराम तथा भगवान परशुराम के बीच रोचक प्रसंग की कथा के साथ परशुराम जी द्वारा श्रीराम के अवतारी रूप को पहचान लिया तथा उनकी वे प्रार्थना करने लगे। कथाव्यास कहते है कि परशुराम क्रोध के प्रतीक हैं और श्रीराम मर्यादा के प्रतीक है। क्रोध बुद्धि और विवेक को हर लेता है। इसका साक्षात् उदाहरण है कि परशुराम अपने सामने खड़े ब्रह्म को पहचान नही पा रहे है जबकि वे स्वंय उसी ब्रह्म के अंशावतार है। क्रोध के वशीभूत परशुराम के प्रश्नों पर श्रीराम एवं लक्ष्मण सहजता एवं सरलता के साथ बार–बार अपने मर्यादित आचरण से परशुराम का क्रोध शान्त कराना चाहते है। अंततः

परशुराम के वैष्णव धनुष पर श्रीराम ने प्रत्यंचा चढ़ा दी तब परशुराम को श्रीराम की दिव्यता का ज्ञान होता है वे जड़वत हो जाते हैं। भगवान सन्देश देते हैं। शान्त, धीर, गम्भीर शक्तिमान को भी अवसर आने पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन न करने पर दुष्ट शक्तियॉ उसकी धैर्यता का दुरुपयोग करती हैं।

क्रोध पाप का मूल है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम क्रोध की प्रतीक ताड़का एवं सुबाहु का बध करते हैं। महाराजा जनक के धनुषयज्ञ में पहॅुचकर शिवधनुष तोड़ते है तथा क्रोध के दूसरे प्रतीक भगवान परशुराम का क्रोध शान्त कर उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। इस प्रकार ताड़का बध से भगवान परशुराम से मिलन तक की श्रीराम कथा में आज धनुषयज्ञ

के साथ श्रीराम विवाह की कथा को विस्तार मिला। कथाव्यास कहते है कि भगवत् कृपा से ही यज्ञ पूरा होते है। भगवान् का चरणामृत हिन्दू परिवारों में प्रतिदिन लेने का विधान है, इससे उनका काल मृत्यु नही होती, सभी व्याधियों का विनाश होता है, पुर्नजन्म से मुक्ति हो जाती है। भगवान के **चरण पतित पावन** कहे गये है। इन्ही चरणों ने अहिल्या का उद्धार किया । अहिल्या मुक्त होकर पतिधाम चली गई। भगवान ने वशिष्ठ–विश्वामित्र को मिलाया, क्योकि धर्म जोड़ता है, एक दूसरे को मिलाने का कार्य करता है, धर्म के समक्ष कोई भेद नही।

व्यासपीठ का पूजन अनुष्ठान के यजमानगण सपरिवार सहित श्री बालकृष्ण सर्राफ, महेश पोद्दार, विकास जालान, संतोष अग्रवाल, श्री अवधेश सिंह, श्री अजय सिंह, पुष्पदन्त जैन, श्री ओम प्रकाश जालान, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री गंगा राय, श्री अरूण कुमार अग्रवाल, श्री चन्द्र बंसल, श्री ओम प्रकाश कर्मचन्दानी, श्री संजय गुप्ता, श्री कृष्ण मोहन, श्री प्रदीप जोशी, इत्यादि ने किया।